न्यूज़ टुडे

खान मंत्रालय ने नायकरपट्टी टंगस्टन खनिज ब्लॉक की नीलामी रद्द की

यह निर्णय इस खनिज ब्लॉक क्षेत्र में स्थित **अरिट्टापट्टी जैव विविधता विरासत स्थल (BHS)** को संरक्षित करने के लिए लिया गया है।

- **मदुरै जिले में स्थित अरिट्टापट्टी तमिलनाडु का पहला BHS है।** यह पारिस्थितिकी और ऐतिहासिक रूप से काफी समृद्ध स्थल है। इसमें **2,200 वर्ष पुराने शैल कर्तित मंदिर, महापाषाणकालीन संरचनाएं, तमिल ब्राह्मी में शिलालेख** आदि स्थित हैं।

जैव विविधता विरासत स्थल (BHS) के बारे में

- **परिभाषा:** जैव विविधता विरासत स्थल (BHS) **विशिष्ट पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील पारिस्थितिकी-तंत्र वाले क्षेत्रों** को कहा जाता है। इनमें कोई एक या अधिक घटक शामिल होते हैं (इन्फोग्राफिक देखें)।
  - **भारत में पहला BHS: नल्लूर इमली उपवन, बेंगलुरु (2007)।**
  - **वर्तमान स्थिति:** भारत में 47 BHS (दिसंबर 2024 तक) हैं।
- **कानूनी प्रावधान: जैव विविधता अधिनियम, 2002 की धारा 37** के तहत, **राज्य सरकार** स्थानीय निकायों के परामर्श से **जैव विविधता के नजरिए से महत्वपूर्ण क्षेत्रों को BHS** के रूप में अधिसूचित कर सकती है।
  - **राज्य सरकार,** केंद्र सरकार के परामर्श से **BHS के प्रबंधन एवं संरक्षण के लिए नियम** बना सकती है।
- **प्रबंधन:** इनका प्रबंधन **जैव विविधता प्रबंधन समिति (BMC)** या BMC की अनुपस्थिति में प्रासंगिक स्थानीय निकाय द्वारा निर्धारित अन्य उपयुक्त संस्था द्वारा किया जाता है।
  - **जैव विविधता अधिनियम, 2002** के तहत राज्य में प्रत्येक स्थानीय निकाय को **जैव विविधता के संरक्षण, उनके संधारणीय उपयोग और दस्तावेजीकरण को बढ़ावा** देने के लिए अपने क्षेत्र में एक **जैव विविधता प्रबंधन समिति का गठन करना अनिवार्य है।**
- **निगरानी:** यह कार्य **राज्य जैव विविधता बोर्ड द्वारा गठित राज्य स्तरीय निगरानी समिति** द्वारा किया जाता है।
- **सामान्यतः** प्रस्तावित जैव विविधता विरासत स्थल (BHS) के आसपास या भीतर रहने वाले समुदायों पर उनके पारंपरिक तरीकों या प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर **कोई प्रतिबंध नहीं** लगाया जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने जन्मसिद्ध नागरिकता को समाप्त करने के लिए एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए

हालांकि, एक संघीय न्यायाधीश ने अस्थायी रूप से इस कार्यकारी आदेश पर रोक लगा दी है, इस आदेश द्वारा माता-पिता की आव्रजन स्थिति की परवाह किए बिना जन्मसिद्ध नागरिकता की संवैधानिक गारंटी को समाप्त कर दिया गया था।

- **परिभाषा:** जन्मसिद्ध नागरिकता **अमेरिकी संविधान के 14वें संशोधन (1868) के तहत** एक प्रावधान है। यह प्रावधान अमेरिका में जन्मे किसी भी व्यक्ति को स्वतः नागरिकता प्रदान करता है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ: संयुक्त राज्य अमेरिका बनाम वोंग किम आर्क (1898) निर्णय** में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट द्वारा गैर-नागरिक माता-पिता के बच्चों के लिए भी इसे बरकरार रखा गया है।

अमेरिकी जन्मसिद्ध नागरिकता की समाप्ति के भारत पर प्रभाव

- **H-1B वीज़ा धारकों पर प्रभाव:** H-1B वीजा पर भारत से अमेरिका काम करने गए लोगों (पेशेवरों) के जन्मे बच्चे, या **ग्रीन कार्ड** मिलने की प्रतीक्षा कर रहे बच्चे **अब स्वतः नागरिकता के लिए पात्र नहीं** होंगे।
  - ज्ञातव्य है कि **ग्रीन कार्ड** किसी व्यक्ति को अमेरिका में **स्थायी रूप से रहने और काम करने की अनुमति** देता है।
  - **H-1B वीज़ा:** यह एक **अस्थायी वीज़ा** है, जो नियोक्ताओं को विदेशी पेशेवरों को स्नातक डिग्री वाली जॉब्स के लिए भर्ती करने की अनुमति देता है।
- **अस्थायी वीज़ा धारक:** भारतीय छात्रों और अस्थायी वीज़ा पर रहने वाले परिवारों को अमेरिका में जन्मे अपने बच्चों के लिए अमेरिका की नागरिकता हासिल करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।
  - उल्लेखनीय है कि भारतीय छात्र **अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के सबसे बड़े समूहों में से एक हैं।**
- **आप्रवास पर प्रभाव:** यह कदम भारतीय पेशेवरों, छात्रों आदि को अमेरिका में बसने से हतोत्साहित करेगा और उन्हें कनाडा एवं ऑस्ट्रेलिया जैसे आप्रवास-हितैषी देशों की ओर रुख करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।
- **"बर्थ टूरिज्म" पर अंकुश:** इससे विशेष रूप से महिलाओं द्वारा बच्चे को जन्म देने के लिए अमेरिका की यात्रा करने संबंधी प्रवृत्तियों पर रोक लगेगी। इस तरह से अमेरिका में जन्में बच्चों के लिए अमेरिका की नागरिकता का दावा किया जा सकता था।

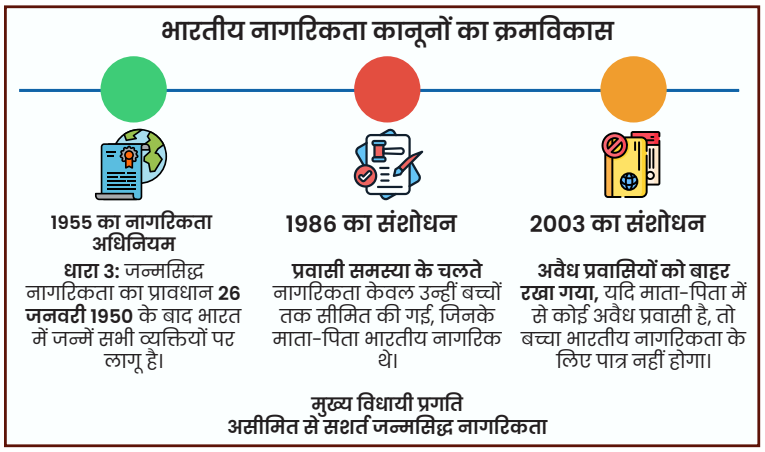

अमेरिकी राष्ट्रपति ने सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) पर प्रतिबंध लगाने का कार्यकारी आदेश जारी किया

यह आदेश संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकार क्षेत्र में **US CBDC को जारी करने, प्रचलन में लाने और उपयोग करने पर प्रतिबंध** लगाता है। US CBDC को **'डिजिटल डॉलर'** के रूप में भी जाना जाता है।

सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) के बारे में

- **परिभाषा:** CBDC देश की **संप्रभु मुद्रा का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण** है। इसे संबंधित देश के **केंद्रीय बैंक** द्वारा जारी किया जाता है।
  - यह **क्रिप्टोकरेंसी से अलग** है, जो प्रकृति में **विकेन्द्रीकृत** होती है।
- **CBDC के प्रकार:**
  - **होलसेल CBDC: वित्तीय संस्थानों और बाजार सहभागियों द्वारा बड़े पैमाने पर लेन-देन** के लिए इसका उपयोग किया जाता है। जैसे कि बैंकों के बीच अंतरण, प्रतिभूति निपटान आदि।
  - **रिटेल CBDC:** इसे **खुदरा उपभोक्ताओं, आम लोगों और व्यवसाय** द्वारा दैनिक लेन-देन करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। ये निम्नलिखित **2 प्रकार के होते हैं:**
  - **टोकन-आधारित: निजी और सार्वजनिक कुंजियों का उपयोग करके** एक्सेस किया जाता है। इससे **अनाम (Anonymous) लेन-देन की सुविधा** मिलती है।
  - **खाता-आधारित:** उपयोगकर्ताओं को **अपने खातों तक पहुंचने और उनका उपयोग करने के लिए डिजिटल पहचान** की आवश्यकता होती है।
- **CBDC की विशेषताएं:**
  - इसे **भुगतान के माध्यम** के रूप में अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए। यह वैध मुद्रा है तथा सभी नागरिकों, उद्यमों और सरकारी एजेंसियों द्वारा मूल्य का सुरक्षित भंडारण है।
  - **उपयोग में सुविधा:** इससे मुद्रा जारी करने और लेन-देन की लागत कम होने की उम्मीद है।
  - **मौजूदा मुद्रा से अलग:** यह **केंद्रीय बैंक (RBI) की देनदारी** है, न कि किसी वाणिज्यिक बैंक की।

CBDC से संबंधित समस्याएं:

- वित्तीय प्रणाली की स्थिरता को खतरा; व्यक्तिगत गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी जोखिम; साइबर सुरक्षा चुनौतियां आदि।

भारत में CBDC पहल- RBI का ई-रुपी (e₹)

- **उत्पत्ति:** इसे भारतीय रिजर्व बैंक ने 2022 में लॉन्च किया था।
- **प्रकार:** यह भारतीय रुपए का डिजिटल संस्करण है। इसका फिएट मुद्रा के साथ वन-टू-वन रूप में विनिमय किया जा सकता है।
- **बैंकों और गैर-बैंकों** द्वारा पेश किए गए **e-वॉलेट** में e₹ को रखा जा सकता है और इसका लेन-देन किया जा सकता है। इसका उपयोग करके **लोगों के बीच आपसी भुगतान या लोगों और व्यापारियों के बीच लेन-देन** किया जा सकता है।

CBDC के लाभ

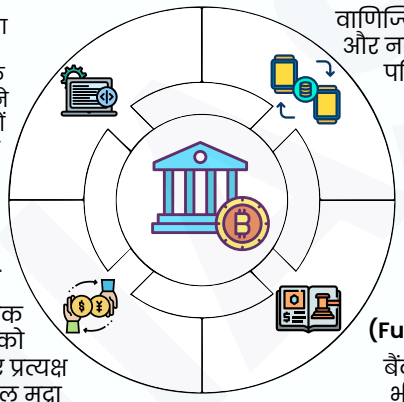

एक नए शोध के अनुसार "भारत में लौह युग चौथी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ था"

हाल ही में, **"लौह की प्राचीनता: तमिलनाडु से हालिया रेडियोमेट्रिक तिथियां'** शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट में **भारत और विश्व में लौह युग से संबंधित मान्य धारणाओं को चुनौती** दी गई है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर:

- तमिलनाडु में **लौह प्रौद्योगिकी का संबंध 3345 ईसा पूर्व (BCE)** से है।
- **शिवगलई से प्राप्त चारकोल और मृदभांड के टुकड़े 2953 ईसा पूर्व से 3345 ईसा पूर्व** के हैं। यह विश्व में **लौह प्रौद्योगिकी का अब तक का सबसे पुराना प्रमाण** है।
- **किलनामंडी** में पाया गया 1692 ईसा पूर्व का पाषाण ताबूत (सार्कोफेगस), **तमिलनाडु में अपनी तरह का सबसे पुराना शवाधान** है।
- **मईलाडुमपरई, किलनामंडी, पेरुंगालुर** जैसे स्थलों पर **लोहा गलाने की भट्टियों की खोज** की गई है। ये खोज इस क्षेत्र की तकनीकी प्रगति और मजबूत लौह उपकरण व हथियार बनाने की दक्षता को दर्शाती है।

नई खोज का महत्त्व:

- **वैश्विक लौह युग के कालक्रम को चुनौती:** लौह युग को परंपरागत रूप से **अनातोलिया (तुर्की) के हित्ती साम्राज्य** से जोड़ा जाता है। माना जाता है कि अनातोलिया में लौह प्रौद्योगिकी का आरंभ लगभग **1300 ईसा पूर्व** में हुआ था।
- **सांस्कृतिक विकास के रैखिक मॉडल को चुनौती:** पारंपरिक धारणा के अनुसार **ताम्र के बाद लौह का प्रचलन आरंभ** हुआ था। ऐसा इस कारण, क्योंकि लौह धातु के लिए अलग तरह के कौशल और उन्नत स्तर की धातुकर्म विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।
- **भारत में लौह युग और ताम्र-कांस्य युग संभवतः समकालीन थे:** वहीं विश्व में ताम्र-कांस्य युग के बाद लौह युग शुरू हुआ था।
- पहले माना जाता था कि **भारत में लौह युग 1500 से 2000 ईसा पूर्व** के बीच शुरू हुआ था। यह **सिंधु घाटी सभ्यता के बाद का काल** है।
- नई खोज और स्टडी **वी. गॉर्डन चाइल्ड और मॉर्टिमर व्हीलर** जैसे विद्वानों की धारणाओं को चुनौती देती है। इन विद्वानों के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में **लौह प्रौद्योगिकी का प्रसार भारत के एकल पश्चिमी केंद्र** से हुआ था।

अध्ययन में उपयोग की गई डेटिंग तकनीक

- **रेडियोमेट्रिक डेटिंग:**
  - यह वैज्ञानिक विधि **चट्टानों, जीवाश्मों या वस्तुओं में रेडियोधर्मी समस्थानिकों के क्षय का विश्लेषण** करके इनकी आयु का निर्धारण करती है।
  - **एक्सेलेरेटर मास स्पेक्ट्रोमेट्री** रेडियो आइसोटोप अनुपातों का उच्च सटीकता से मापन करती है। यह स्पेक्ट्रोमेट्री व रेडियोमेट्रिक डेटिंग का एक प्रकार है।
- **ऑप्टिकली स्टिम्युलेटेड ल्यूमिनेसेंस (OSL) विश्लेषण:** इस तकनीक का उपयोग **क्वार्ट्ज या फेल्स्पार** खनिजों के अंतिम बार प्रकाश या ऊष्मा के संपर्क में आने के समय को जानने के लिए किया जाता है।

16वें वित्त आयोग ने नीति आयोग की रिपोर्ट: 'राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI) 2025' का प्रथम अंक जारी किया

राज्य दो-तिहाई सार्वजनिक व्यय और एक-तिहाई राजस्व का प्रबंधन करते हैं। साथ ही, वे विकास और अवसंरचना में प्रमुख भूमिकाएं भी निभाते हैं। इससे उनका राजकोषीय स्वास्थ्य राष्ट्रीय प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

'राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI) 2025' के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्य: ओडिशा** ने राजकोषीय स्वास्थ्य में उत्कृष्टता हासिल की है। साथ ही, ऋण सूचकांक और ऋण स्थिरता रैंकिंग में **सर्वोच्च सूचकांक** स्कोर प्राप्त किया है।
- **एस्पिरेशनल (आकांक्षी) राज्य:** इन राज्यों को बड़ी राजकोषीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे- व्यय की निम्न गुणवत्ता, ऋण स्थिरता और राजस्व जुटाने से संबंधित मुद्दे।
- **राजस्व संग्रहण: गोवा, तेलंगाना और ओडिशा** राजस्व संग्रहण में अग्रणी हैं।
- **पूंजीगत व्यय: एचीवर (सफल) और फ्रंट रनर** राज्य अपने विकास संबंधी व्यय का लगभग 27% पूंजीगत व्यय के लिए आवंटित करते हैं। इसके विपरीत, **परफ़ॉर्मर (निष्पादक) और एस्पिरेशनल** राज्य केवल लगभग 10% आवंटित करते हैं।
- **ऋण स्थिरता: पश्चिम बंगाल और पंजाब** जैसे राज्यों पर ऋण का बोझ बढ़ रहा है। इससे ऋण स्थिरता को लेकर चिंताएं बढ़ रही हैं।

राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI) 2025 के बारे में

- **उद्देश्य:** संतुलित क्षेत्रीय विकास और आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए राज्यों के राजकोषीय स्वास्थ्य का मूल्यांकन करना।
- **आकलन: 18 प्रमुख राज्यों** का राजकोषीय स्वास्थ्य।
- **पांच प्रमुख उप-सूचकांकों पर आधारित:** व्यय की गुणवत्ता, राजस्व संग्रहण, राजकोषीय विवेकशीलता, ऋण सूचकांक और ऋण स्थिरता।
- **राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक का महत्त्व:**
  - **राजकोषीय स्वास्थ्य ढांचा:** यह राजकोषीय समेकन, पारदर्शिता और संसाधन प्रबंधन में सहायता करता है।
  - **राष्ट्रीय विज़न को समर्थन:** सूचकांक से मिलने वाले परिणाम भारत के "विकसित भारत@2047" को प्राप्त करने के व्यापक विज़न के अनुरूप हैं, जहां राज्य स्तर पर वित्तीय अनुशासन देश के आर्थिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वित्तीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI) के अनुसार राज्य श्रेणियां

अचीवर (FHI स्कोर > 50)
वित्तीय स्वास्थ्य में शीर्ष प्रदर्शनिकर्ता
ओडिशा, छत्तीसगढ़, गोवा, झारखंड और गुजरात

फ्रंट रनर (FHI स्कोर 40-50)
मजबूत वित्तीय प्रदर्शन
महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और कर्नाटक

परफ़ॉर्मर (FHI स्कोर 25-40)
मध्यम वित्तीय स्वास्थ्य
तमिलनाडु, राजस्थान, बिहार व हरियाणा

एस्पिरेशनल (FHI स्कोर ≤ 25)
वित्तीय सुधार की आवश्यकता
केरल, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश एवं पंजाब

अन्य सुर्खियां

डिजाइनिंग इनोवेटिव सॉल्यूशन्स फॉर होलिस्टिक एक्सेस टू जस्टिस (दिशा/ DISHA) योजना

हाल ही में, दिशा योजना के तहत "**हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान अभियान**" आयोजित किया गया। इसे **भारत के संविधान को अपनाए जाने की 75वीं वर्षगांठ और भारत के एक गणराज्य के रूप में स्थापना** के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया है।

दिशा (DISHA) योजना के बारे में

- दिशा/ DISHA से आशय है: **डिजाइनिंग इनोवेटिव सॉल्यूशन्स फॉर होलिस्टिक एक्सेस टू जस्टिस**।
- शुरुआत: इस योजना की शुरुआत **2021 में विधि और न्याय मंत्रालय के न्याय विभाग** ने की थी। इसे **5 वर्ष की अवधि (2021-2026)** के लिए शुरू किया गया है।
- **उद्देश्य:** भारतीय संविधान की **प्रस्तावना तथा अनुच्छेद 39A, 14 और 21 के प्रावधानों के अनुरूप** भारत के लोगों को "**न्याय दिलाना**" सुनिश्चित करना ।
- **अन्य उद्देश्य:** यह योजना टेली-लॉ, **प्रो बोनो लीगल सर्विसेज (न्याय बंधु) तथा कानूनी साक्षरता और कानूनी जागरूकता कार्यक्रमों** के लाभों को अधिक लोगों तक बेहतर तरीके से पहुंचाती है।

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI)

हाल ही में, भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) ने **अपना छठा नया क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी** में स्थापित किया।

- इससे पहले, IWAI के **पांच क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी, पटना, कोच्चि, भुवनेश्वर और कोलकाता** में स्थापित किए गए थे।

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) के बारे में

- **नोडल मंत्रालय:** पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय।
- यह **भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अधिनियम (IWAI), 1985** के तहत स्थापित एक **वैधानिक निकाय** है।
- **लक्ष्य:** पोत परिवहन और नौवहन उद्देश्यों के लिए **भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों का विकास एवं विनियमन** करना।
- **उद्देश्य:** अंतर्देशीय जल परिवहन हेतु अवसंरचना के विकास एवं रखरखाव के लिए परियोजनाएं शुरू करना। इसके लिए इस संस्था को **पोत परिवहन मंत्रालय** से अनुदान प्राप्त होता है।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025

हाल ही में, केंद्रीय सहकारिता मंत्री ने "**अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष, 2025**" के **उद्घाटन समारोह** को संबोधित किया।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष, 2025 के बारे में

- **संयुक्त राष्ट्र महासभा** ने 2024 में घोषणा की थी कि **2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष** (IYC-2025) के रूप में मनाया जाएगा।
  - इससे पहले संयुक्त राष्ट्र ने **2012 को भी 'अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष'** के रूप में मनाया था।
- **2025 के लिए थीम:** "**सहकारिताएं बेहतर विश्व का निर्माण करती हैं** (Cooperatives Build a Better World)।"
- **उद्देश्य:** सहकारिता वर्ष मनाने का उद्देश्य है- **गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन आदि में सहकारी उद्यमों के अमूल्य योगदान के बारे में जन जागरूकता बढ़ाना।**

कोडईकनाल सौर वेधशाला

अंतर्राष्ट्रीय सौर सम्मेलन (International solar conference) में **कोडईकनाल सौर वेधशाला की 125वीं वर्षगांठ** मनाई गई।

कोडईकनाल सौर वेधशाला के बारे में

- **स्थापना:** इसकी **स्थापना 1899** में हुई थी। वर्तमान में इसके स्वामित्व और संचालन की जिम्मेदारी **भारतीय खगोल-भौतिकी संस्थान** (Indian Institute of Astrophysics) के पास है।
- **अवस्थिति: तमिलनाडु की पलानी पहाड़ियों में कोडाइकनाल** में।
  - कोडईकनाल **भूमध्य रेखा के निकट** है। साथ ही, अधिक ऊंचाई पर यहां **धूल रहित वातावरण** पाया जाता है। इसलिए, यहां **सौर वेधशाला की स्थापना** की गई है।
- **उद्देश्य:** इस वेधशाला की स्थापना इसलिए की गई है, ताकि यह जानकारी प्राप्त की जा सके कि **सूर्य पृथ्वी के वायुमंडल को कैसे गर्म** करता है। साथ ही, इसका उद्देश्य **मानसून प्रणाली के बारे में समझ बढ़ाने हेतु डेटा संग्रह** करना भी है।

रिज़र्व बैंक - एकीकृत लोकपाल योजना (RB-IOS), 2021

हाल ही में, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने 2023-24 की अवधि के लिए लोकपाल योजना की वार्षिक रिपोर्ट जारी की।

- वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2023 की तुलना में वित्त वर्ष 2024 में शिकायतों में लगभग 33% की वृद्धि दर्ज की गई है।

रिजर्व बैंक – एकीकृत लोकपाल योजना (RB-IOS) के बारे में

- यह योजना 2021 में शुरू की गई थी। इसे RBI के वैकल्पिक शिकायत निवारण (AGR) फ्रेमवर्क के तहत शुरू किया गया है।
- उद्देश्य: 'एक राष्ट्र एक लोकपाल सिद्धांत' का अनुपालन करना।
- इस योजना में RBI की निम्नलिखित तीन पुरानी लोकपाल योजनाओं को एकीकृत किया गया है:
  - बैंकिंग लोकपाल योजना, 2006;
  - गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के लिए लोकपाल योजना, 2018; तथा
  - डिजिटल लेन-देन के लिए लोकपाल योजना, 2019.
- यह योजना RBI द्वारा विनियमित संस्थाओं के खिलाफ शिकायतों के समाधान के लिए 'सिंगल विंडो' प्रदान करती है।
  - RBI द्वारा विनियमित संस्थाओं में शामिल हैं- वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRBs), सहकारी बैंक, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (NBFCs), भुगतान प्रणाली भागीदार और क्रेडिट सूचना कंपनियां।

स्टारगार्ड्ट रोग

हाल ही में, स्विटजरलैंड के शोधकर्ताओं ने स्टारगार्ड्ट रोग के इलाज में मदद के लिए एक जीन संपादन तकनीक विकसित की है।

स्टारगार्ड्ट रोग (जुवेनाइल मैक्युलर डिस्ट्रॉफी) के बारे में

- यह एक दुर्लभ वंशानुगत/ आनुवंशिक नेत्र रोग है। यह बच्चों और युवा वयस्कों में दृष्टि लोप का कारण बनता है।
  - यह ABCA4 जीन में परिवर्तन के कारण होता है। यह जीन शरीर द्वारा विटामिन A के उपयोग को प्रभावित करता है।
- यह तब होता है, जब वसायुक्त पदार्थ (लिपोफ्यूसिन) मैक्युला पर जमा हो जाता है। मैक्युला रेटिना का वह छोटा हिस्सा है, जो शार्प व सेंट्रल विज़न के लिए आवश्यक होता है।
  - आमतौर पर यह द्विपक्षीय होता है, जिसमें दोनों आंखें शामिल होती हैं।
- उपचार: इसका कोई उपचार उपलब्ध नहीं है।

संजय सिस्टम (SANJAY System)

हाल ही में, रक्षा मंत्री ने भारतीय थल सेना की निगरानी और टोही क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उन्नत युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली (BSS) संजय का शुभारंभ किया।

संजय सिस्टम के बारे में

- इसे भारतीय थल सेना और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL) ने संयुक्त रूप से विकसित किया है। इसे 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के अनुरूप विकसित किया गया है।
- यह एकत्रित जानकारी को संसाधित करके आर्मी डेटा नेटवर्क और सैटेलाइट संचार नेटवर्क के माध्यम से युद्धक्षेत्र का एकीकृत निगरानी चित्र तैयार करेगा।
  - इस प्रणाली को जमीनी और हवाई बैटलफील्ड सेंसर्स से प्राप्त डेटा को निर्बाध रूप से एकीकृत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

कॉर्प्स फ्लावर

यह एक दुर्लभ पादप है। यह एक दशक से भी अधिक समय के बाद पहली बार ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में खिला है।

कॉर्प्स फ्लावर (एमोर्फोफैलस टाइटेनम) के बारे में

- यह पादप फूल खिलने के दौरान सड़ने जैसी बदबू के लिए जाना जाता है।
- यह इंडोनेशिया के जंगलों में पाया जाता है। यहां इसे बुंगा बंगकाई के नाम से जाना जाता है।
- इसमें विश्व के किसी भी पादप की तुलना में सबसे बड़ी पुष्प संरचना होती है, जो जमीन से 3 मीटर तक ऊंची होती है।
- यह पादप आमतौर पर कुछ वर्षों में एक बार से अधिक नहीं खिलता है और यह केवल एक दिन तक ही खिलता है।
- IUCN ने इसे एंडेंजर्ड के रूप में सूचीबद्ध किया है।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) (राजधानी: किंशासा)

हाल ही में, गैर-राज्य सशस्त्र समूह M23 द्वारा कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) के पूर्वी भाग में की जाने वाली हिंसा के कारण क्षेत्र में बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ है।

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) के बारे में

- भौगोलिक विशेषताएं:
  - यह अफ्रीका महाद्वीप में अल्जीरिया के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश और उप-सहारा अफ्रीका (SSA) में सबसे बड़ा देश है।
  - भू-सीमाएं: अंगोला, बुरुंडी, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, कांगो गणराज्य, रवांडा, सूडान, तंजानिया, युगांडा और जाम्बिया।
  - समुद्री सीमा: अटलांटिक महासागर।
- भौगोलिक विशेषताएं:
  - प्रमुख नदी: कांगो नदी (नील नदी के बाद दूसरी सबसे लंबी नदी)।
  - वनस्पति: उष्णकटिबंधीय वन।
    - कांगो बेसिन में दुनिया के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय पीटलैंड अवस्थित हैं।
  - खनिज: कोबाल्ट, सोना, तांबा, कोयला, लौह अयस्क, लिथियम आदि।